विचार बिन्दु

जिस तरह रंग सादगी को निखार देते हैं उसी तरह सादगी भी रंगों को निखार देती है। सहयोग सफलता का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। –मुक्ता

नए संसद भवन का उद्घाटन– अनावश्यक विवाद

नए संसद भवन का उद्घाटन 28 मई 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। शायद ही कोई उद्घाटन समारोह इतना चर्चा और विवादों के घेरे में रहा हो जितना संसद भवन का यह उद्घाटन रहा है। संसद भवन आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त भव्य भवन है। भविष्य में परिसीमन के बाद लोकसभा और राज्यसभा की सीटों में होने वाले वृद्धि को ध्यान में रखते हुए इसे बनाया गया है। इसके निर्माण पर 862 करोड़ रुपये व्यय हुए और इसे बनने में लगभग ढ्राई साल लगे। इसमें कई प्रकार की विशेषताएं और विशिष्टताएं हैं जिनका सभी टी.वी. चैनलों के माध्यम से दिन भर प्रसारण किया गया। उद्घाटन समारोह के अंतर्गत आयोजित हवन, सर्वधर्म प्रार्थना, सेंगोल (धर्म दंड) का प्रधानमंत्री को सौंपा जाना आदि सभी गतिविधियों का सभी चैनलों द्वारा सीधा प्रसारण किया गया।

यह समारोह अनेक कारणों से विवादों में रहा। सबसे मुख्य विवाद का प्रश्न तब सामने आया जब कांग्रेस के नेतृत्व में विभिन्न विपक्षी दलों द्वारा यह मांग की गई कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के द्वारा इसका उद्घाटन कराया जाना चाहिए था । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 79 के अंतर्गत संसद का गठन लोकसभा, राज्यसभा और राष्ट्रपति मिलकर करते हैं। यह भी कहा गया कि वही दोनों सदनों को आहूत करती हैं एवं दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करती हैं। अभिभाषण उनके द्वारा दिया जाता है। भारतीय संविधान में सर्वोच्च स्थान राष्ट्रपति जी को प्राप्त है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा किए जाने वाले उद्घाटन समारोह को स्थगित कराने हेतु सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका भी दायर की गई, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने उचित नहीं मानते हुए प्रारंभिक स्तर पर ही अस्वीकार कर दिया ।

जब विपक्षी गणों की इस मांग पर कोई ध्यान सरकार द्वारा नहीं दिया गया तो लगभग 20 विपक्षी दलों ने उद्घाटन समारोह का बहिष्कार करने का सामूहिक निर्णय लिया। इस प्रकार लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद के नए भवन का उद्घाटन 20 विपक्षी दलों के अनुपस्थिति में प्रधानमंत्री द्वारा किया गया।

कोरोना के समय जिस समय सेंट्रल विस्ता और संसद भवन का कार्य प्रारंभ हुआ था उस समय भी विपक्षी दलों ने इसका घोर विरोध यह कहकर किया था कि कोरोना महामारी से मुकाबला करने के स्थान पर सेंट्रल विस्टा पर लगभग 20000 करोड़ रुपये का खर्च करना एकदम अनुचित है। यह भी कहा गया कि दुनिया के देशों की संसद भारतीय संसद से भी बहुत पुराने भवनों में चल रही है, अत: नया भव्य भवन बनाना जनता के पैसे की बर्बादी है। सरकार ने विरोध की कोई परवाह नहीं की और इस पर कार्य जारी रखा। और अब जबकि संसद भवन बनकर तैयार हो गया है तो इसका उद्घाटन वीर सावरकर की जन्म तिथि 28 मई को किया गया। तिथि के चयन पर भी विपक्ष को आपत्ति थी। जिस प्रकार प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष की बातों की उपेक्षा की उससे तो ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री न तो असहमति को पसंद करते हैं एवं न ही उसकी परवाह करते हैं। यदि वे विपक्ष की मांग को ध्यान में रखते हुए उनसे संवाद स्थापित करते तो संभवतया इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न नहीं होती ।

जिस समय प्रधानमंत्री नए संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर, सदैव की भांति उत्साह से ओतप्रोत भाषण में भारतीय लोकतंत्र की दुहाई दे रहे थे, ठीक उसी समय लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर ओलंपिक पदक विजेता महिला पहलवानों साक्षी मलिक और विनेश फोगाट को जबरदस्ती पुलिस द्वारा धरना स्थल से उठाया जा रहा था एवं सड़कों पर घसीटा जा रहा था। ये दृश्य विचलित करने वाले थे। ऐसा बर्बरता पूर्ण सलूक उन महिला पहलवानों के साथ किया जा रहा था जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारत के गौरव को बढ़ाने में लगा दिया । जब वे ओलिंपिक खेलों के बाद लौटे तो प्रधानमंत्री मोदी ने अपने आवास पर चाय हेतु न केवल आमंत्रित किया अपितु उनकी बहुत सराहना करते हुए कहा कि इन्होंने भारत का गौरव बढ़ाया है। यही पहलवान एक माह से अधिक समय से जंतर-मंतर पर धरने पर बैठे हैं। उनकी मांगों के संबंध में सरकार ने कोई पहल नहीं की और न उनसे बात करके समस्या का हल निकालने का प्रयास किया। उनकी मांग केवल इतनी थी कि उनके साथ यौन उत्पीड़न करने वाले कुश्ती महा संघ के अध्यक्ष और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह को गिरफ्तार किया जाए। वैसे भी कानून के अंतर्गत नाबालिग पीड़िता के बयान दर्ज होते ही संबंधित अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिए था। इस प्रकार यौन उत्पीड़न के अभियुक्त को निरंतर संरक्षण प्रदान करना लोकतांत्रिक एवं संविधान की मूलभूत भावना के अनुकूल नहीं है। यह विडंबना ही है कि जब महिला पहलवानों को सड़क पर घसीटा जा रहा था, उसी समय बृजभूषण सिंह नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह में सम्मानपूर्वक भाग ले रहा था ।

> **यदि विपक्षी दलों की बात को ध्यान में रखते हुए एवं संवैधानिक व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए प्रधानमंत्री बड़ा दिल दिखाते हुए राष्ट्रपति, जो कि एक महिला एवं आदिवासी हैं, से इस नए भवन का उद्घाटन करवा लेते तो वह अपनी छवि को और अधिक बड़ी कर सकते थे। यह अवसर उन्होंने खो दिया। विपक्षी दलों को भी अपने अहम के कारण इस समारोह के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित नहीं होने का दोषी माना जाएगा।**

यह तो बात हुई सत्तापक्ष की, जिसने विपक्ष की आलोचना को सिरे से खारिज करते हुए उन्हें लगभग इसी अंदाज में लिया कि "आपको जो करना है करते रहिए, हम वही करेंगे जो हमें करना है"। इसी प्रकार का दृष्टिकोण अन्य अवसरों पर पहले भी देखने को मिला है। पाठकों को याद होगा कि किसान आंदोलन के समय, सरकार द्वारा बार-बार यह घोषणा करने के बावजूद कि तीनों कृषि कानून किसी सूरत में वापस नहीं होंगे, आंदोलन के दबाव के चलते, प्रधानमंत्री को न केवल देश से माफी माँगनी पड़ी, तीनों कानून वापस लेने पड़े ।

संसद के उद्घाटन के अवसर पर माहौल अधिक गरिमा युक्त और लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुकूल होता यदि संपूर्ण विपक्ष भी इस उद्घाटन समारोह का भाग बनता । इस प्रकार की स्थिति का कारण सत्ता पक्ष की हठधर्मिता थी, वहीं विपक्षी दल भी इसके लिए अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते। संभव है, विपक्षी दलों द्वारा जो तकनीकी बिंदुओं को उठाये गया, वे संविधान की मान्यताओं के अनुसार सही हों, लेकिन कांग्रेस पर विशेष रूप से यह उक्ति लागू होती है–"जिनके घर शीशे के बने हों वह दूसरों के शीशे के घर पर पत्थर नहीं फेंका करते"। जब कांग्रेस ने राष्ट्रपति से ही भवन का उद्घाटन करवाने पर जोर दिया एवं इसे संवैधानिक दृष्टि से उपयुक्त बताया, तो भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने भी ऐसे कई उदाहरण सार्वजनिक कर दिए जब राज्यों की विधानसभाओं का उद्घाटन राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल द्वारा नहीं किया गया अपितु यू पी ए अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा कराया गया जिनका कोई संवैधानिक अधिकार नहीं बनता था। जब कांग्रेस स्वयं इस बात का सम्मान नहीं करती रही है तो फिर केवल भाजपा से ऐसी अपेक्षा करना किसी भी रूप में सही नहीं कहा जा सकता। जहां तक नैतिकता और मर्यादा का प्रश्न है उसकी तो बात करना ही अब बेमानी लगता है । सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ने ही इस प्रकरण में अपनी मर्यादा लाँघी है और जनता केवल एक मूक दर्शक बन कर रह गई है।

संसद के उद्घाटन समारोह के अवसर पर राज्यसभा के सभापति की अनुपस्थिति भी विशेष रूप से अनुभव की गई। उद्घाटन के अवसर पर जहां प्रधानमंत्री की कुर्सी बीच में थी उनके एक ओर लोकसभा अध्यक्ष और दूसरी ओर राज्यसभा के उपाध्यक्ष थे। राज्यसभा के सभापति भारत के उप राष्ट्रपति हैं जिन्हें नहीं बुलाया गया। प्रोटोकॉल में उपराष्ट्रपति का स्थान प्रधानमंत्री से ऊपर होता है। यदि वे आते तो फिर वे ही इसका उद्घाटन करते और ऐसा प्रधानमंत्री मोदी हरगिज़ नहीं चाहते थे। यह तो सर्वविदित ही है कि भारत सरकार के किसी भी विभाग का कोई भी शिलान्यास या उद्घाटन का कार्यक्रम हो, मुख्य अतिथि सामान्यता नरेंद्र मोदी होते हैं। संबंधित मंत्रियों को अपने खुद के विभाग के कामों का उद्घाटन व शिलान्यास करने का शायद ही कभी अवसर मिल पाता है । उदाहरणार्थ, अब तक प्रारंभ की गई 17 वंदे भारत रेलों में से 16 को तो प्रधानमंत्री स्वयं ने झंडी दिखाकर रवाना किया और एक को गृह मंत्री अमित शाह द्वारा हरी झंडी दिखाई गई । रेल मंत्री को तो ऐसा कोई अवसर ही नहीं मिला। लगता है सरकार भाजपा की न होकर केवल मोदी की है। लगभग सभी स्थान पर वही व्याप्त रहते हैं। संसद भवन के उद्घाटन का अवसर भला वह कैसे किसी और को देते ।

इस पूरे विवाद में विपक्ष ने भी अपनी किरकिरी कराई है। जनता में एक प्रकार का संदेश गया है कि वह नरेंद्र मोदी के प्रति व्यक्तिगत विद्वेष की भावना से ओतप्रोत है। वह इस बात को शायद पचा नहीं पा रहे हैं कि नरेंद्र मोदी इस महत्वपूर्ण अवसर पर पूर्णतया छाए रहे।

लोकतंत्र में असहमति के प्रति असहनशीलता दिखाना घातक सिद्ध हो सकता है न केवल लोकतंत्र के लिए बल्कि उस व्यक्ति के लिए भी, जो केवल चाटुकारों से घिरा रहे। न तो मीडिया को और न दल के किसी सदस्य को कोई बात नेता के विरुद्ध कहने की अनुमति हो। कोई ऐसा दुस्साहस करे भी तो उसे किसी न किसी रूप से प्रताड़ित करने का रास्ता निकाल लिया जाता है। कुछ विपक्षी दलों के नेता तो उद्घाटन समारोह में संभवत: इसीलिए शामिल हुए कि कहीं उन्हें सरकार के कोप भाजन का शिकार न होना पड़े।

यदि विपक्षी दलों की बात को ध्यान में रखते हुए एवं संवैधानिक व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए प्रधानमंत्री बड़ा दिल दिखाते हुए राष्ट्रपति, जो कि एक महिला एवं आदिवासी हैं, से इस नए भवन का उद्घाटन करवा लेते तो वह अपनी छवि को और अधिक बड़ी कर सकते थे। यह अवसर उन्होंने खो दिया। विपक्षी दलों को भी अपने अहम के कारण इस समारोह के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित नहीं होने का दोषी माना जाएगा। कुल मिलाकर, यह समारोह उतना गरिमा पूर्ण नहीं हो पाया जिसकी अपेक्षा थी। उद्घाटन के अवसर पर विपक्ष का होना स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र का संकेत होता । नए संसद भवन के हॉल की सीटें तो सरकार द्वारा विभिन्न अतिथियों को आमंत्रित करके भर ली गईं। अन्यथा उद्घाटन समारोह के अवसर पर बहुत सारी सीटें हॉल में खाली ही दिखाई देतीं जो अच्छा दृश्य प्रस्तुत नहीं करता । साधारण नागरिक की तरह हम तो यही कह सकते हैं कि यह पूरा प्रकरण अनावश्यक था जिसे टाला जा सकता था। यदि दोनों ही पक्ष अपने-अपने अहंकार को छोड़कर परस्पर संवाद की स्थिति बनाते और मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए लोकतंत्र की स्वस्थ परंपराओं को आगे बढ़ाते तो अच्छा होता। काश, ऐसा हो पाता।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कृषि संस्कृति विकास के जरिए खेती को बचाएं

डॉ. अरुणा व्यास

कृषि को भले ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता रहा है पर योजनागत रूप में जितना कम ध्यान कृषि क्षेत्र पर दिया जाता है, उतना संभवत: अन्य किसी भी क्षेत्र पर नहीं दिया जाता। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि खेती आज भी किसानों के लिए बहुत अधिक लाभकारी क्षेत्र नहीं है। शायद यही वह बड़ा कारण भी है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान खेती की जमीनों का धंधा बड़े पैमाने पर देश में फैला है। किसान खेती से बेरुखी भी करते जा रहे हैं। सवाल यह है कि कैसे कृषि को किसानों के लिए लाभकारी बनाया जाए? कैसे ऊंची लागत को कम किया जाए और कैसे उत्पादकता में तेजी से हो रही कमी की खाई को पाटा जाए।

स्वाभाविक ही है कि इसके लिए कृषि को संस्कृति की समग्रता के रूप में स्वीकार करते हुए इस पर पर्याप्त ध्यान देने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। यह वह समय है जब खेती की जमीनें निरंतर कम होती जा रही है, उत्पादन की लागत तेजी से बढ़ती जा रही है और इसी से खेती से भी वास्तविक किसान निरंतर दूर होते जा रहे हैं। किसान का लेबल उन लोगों के साथ लग रहा है जो मूलत: किसान नहीं हैं, पर इसमें फायदे का सौदा देखकर इसे बड़े पैमाने पर अपना रहे हैं। इससे जो बड़ी समस्या खेती-किसानी की पैदा हुई है, वह यह है कि खेती केवल मुनाफे के उद्देष्य से की जाने लगी है। यह नहीं देखा जा रहा कि अधिक पैदावार लेने के लालच में मिट्टी की उर्वराा शक्ति खत्म हो रही है, रासायनिक उर्वरको के बेजा इस्तेमाल से बीमारियां घर-घर दस्तक दे रही है और पानी की निरंतर कमी होती जा रही है।

यह सही है, खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से भले अभी कोई बड़ा संकट हमारे समक्ष नहीं है परन्तु विष्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले हमारे देष के बरक्स उत्पादन आने वाले वर्षों में इस कदर कम रहने वाला है कि खाद्यान्न के बड़े संकट से देश को जूझना पड़े तो इसमें कोई अचरज नहीं होगा। यह बात इसलिए कि जब खेती वास्तविक किसान नहीं करके व्यापार से जुड़े लोग कर रहे हैं तो जैसे ही खेती वाली जमीन उनके लिए लाभ का सौदा नहीं रहती तो वे जमीनों को किसी अन्य प्रयोजन से बेच-बाचकर अन्यत्र लाभ का सौदा करते हैं, इसी से जमीनों का धंधा तेजी से चल रहा है ।

असल में कृषि हमारे यहां आज भी प्राथमिकता क्षेत्र में नहीं है। खेती से संबंधित विभाग राज्यों में बने हुए हैं परन्तु उनके अंतर्गत बरसों से चली आ रही योजनाओं के अंतर्गत अनुदान और कुछेक किसान मेले, आयोजन भर किए जाते रहे हैं। बदलते समय के अनुसार किसानों की आवश्यकताओं, उनकी समस्याओं और खेती से उनके निरंतर विलग होते जाने पर कहीं कोई ध्यान नहीं है। इससे बड़ा इसका उदाहरण और क्या होगा कि प्रतिदिन के समाचार पत्रों में हजारो एकड़ भूमि के गांवों की खेती की जमीन को आवासीय प्रयोजन से काटकर वहां मल्टीस्टोरी वातानुकूलित मकानों के सपने विज्ञापन के रूप में बेचे जा रहे हैं। कहीं इस ओर कोई सोच शायद बड़े स्तर पर नहीं है कि आवासीय प्रयोजन से भू रूपानतरण से पहले उस जमीन पर बड़े स्तर पर खेती होती रही है। माने खेत लीलकर आवास या फिर उसमें निवेश के सुनहरे सपनों का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है परन्तु इस पर कहीं कोई चिंतन नहीं है कि कैसे आने वाले समय में इन कम हुए खेतों की फसल की भरपाई आबादी के लिए हो पाएगी।

यह सही है, खेती हमारे यहां मानसून का जुआ है परन्तु इतना ही सच यह भी है कि यदि खेती की जमीनों की ढंग से सार-संभाल हो, सिंचाई के साधनों का विकास हो और वर्षाजल संरक्षण के परम्परागत जल स्त्रोतों की ओर हम ध्यान दें और इस संबंध में कोई सुनियोजित नीति पर देशभर में कार्य हो तो खेती के दिन भी फिर सकते हैं। विडम्बना यह भी है कि खेती से जुड़ी तमाम योजनाओं का मूल इस समय बड़े किसान है। छोटे और मंझले किसानों को उनके उत्पादन के विपणन के लिए कहीं कोई योजना नहीं है। दूसरी बड़ी समस्या यह भी है कि जलवायु परिवर्तन से जो संकट खेती के समक्ष जुड़ता जा रहा है, उस पर भी कहीं कोई ध्यान नहीं है। भूजल के निरंतर छीजते चले जाने और भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण होते जाने पर समय रहते ध्यान दिया जाना जरूरी है। अच्छा होता इस संबंध में राष्ट्रीय स्तर पर किसी बड़ी नीति की भी पहल हो।

देशभर में खेती को जलवायु परिवर्तन के संकटो से बचाने के लिए किए जाने वाले उपायों पर इस समय व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाने की जरूरत है। कैसे खेती लाभकारी हो, इस पर भी संवाद सभी स्तरों पर हो और सबसे जरूरी यह भी है कि जमीनों का जो धंघा खेतों को लील कर चलाया जा रहा है, उसके बारे में भी व्यापक स्तर पर मंथन कर कोई नीति बनाई जाए। कृषि संस्कृति के प्रसार के लिए क्यों नहीं देशभर में एक मुहिम ही चलाई जाए।

- डॉ. अरुणा व्यास

ब्रिटेन के मंत्री तारिक अहमद पहली बार अपने ननिहाल जोधपुर आए

- **मेहरानगढ़ किले को देखकर अभिभूत हुए तारिक अहमद**
- **एनजीओ में महिलाओं से मिले तारिक अहमद, ट्वीट किया-सलाम जोधपुर**

जोधपुर, (कासं)। ब्रिटेन में मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, दक्षिण एशिया और यूनाइटेड किंगडम के संयुक्त राष्ट्र राज्य मंत्री तारिक अहमद पहली बार अपने ननिहाल जोधपुर आए। वे इससे पहले भारत तो कई बार आ चुके हैं, लेकिन अपनी मां के मूल शहर को देखने का मौका पहली बार मिला। यहां मेहरानगढ किले की हिस्ट्री और रिस्टोरेशन वर्क को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गए।

इसके बाद संभली ट्रस्ट में महिलाओं से बात की और उनके आर्ट वर्क को नजदीक से देखा। उनके दल में स्टीफन हिक्लिंग (ब्रिटिश डेप्युटी हाई कमिशन, गुजरात एवं राजस्थान) और उन के कार्यलय से साथी, एंड्रयू जैकसन (डेप्युटी डायरेक्टर एचएमजी इंडिया कोऑर्डिनेटर व जोधपुर उत्तर के महापौर कुंती देवडा भी रही। मंत्री तारिक अहमद ने खुद ट्वीट करते हुए लिखा मेरी मां ने 76 साल पहले अपना शहर छोडा था, अब मैं अपने ननिहाल में पहली बार आया हूं-सलाम जोधपुर। उन्होंने अपने अधिकारियों के साथ उमेद पैलेस और मेहरानगढ़ का हस्तशिल्प देखा। यहां के इतिहास और आर्ट रिनोवेशन वर्क को देख कर खुशी जताई। ब्रिटेन के राज्यमंत्री का उम्मेद भवन पैलेस में पारंपरिक तरीके से स्वागत किया गया उन्होंने यहां पहुंचते ही लिखा सलाम जोधपुर। पांच दिन की भारत यात्रा में वह जोधपुर के साथ ही नई दिल्ली और हैदराबाद में रुकेंगे। यहां 3 पॉइंट पर भारत के साथ एग्रीमेंट हो सकता है।

इमर्जिंग वुमन लीडर्स प्रोग्राम के तहत उन्होंने जोधपुर के संभाली ट्रस्ट में स्वयंसेवी संगठनों से जुडी महिलाओं से बातचीत की। वुमन लीडर्स के लिए संभली ट्रस्ट में महिलाओं से मिले। मंत्री अहमद ने इमर्जिंग वुमन लीडरशिप के लिए जोधपुर के संभली ट्रस्ट में महिलाओं से मुलाकात की। सहसंस्थापक मुक्ता कुमारी ने जोधपुरी पारंपरिक गीतों, ढोल-थाली, कुमकुम लगा कर, माला पहना कर स्वागत किया। संस्था के संस्थापक गोविंद सिंह राठौड ने ट्रस्ट में चल रहे महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम, बालिका शिक्षा कार्यक्रम एवं लैंगिक अल्पसंख्यक समाज की पीडाओं एवं उसके लिए ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों एवं मुश्किलों के निवारण की प्रक्रिया से अवगत करवाया। ब्रिटेन के राज्यमंत्री तारिक अहमद ने संभली ट्रस्ट में महिलाओं के आर्ट वर्क को बारीकी से देखा और कई सवाल किए।

संस्था की अधिवक्ता शिवानी सिंह, रीमा गुप्ता क्वात्रा, मनोचिकित्सक डॉ. दीप्ति राजोत्य ने बताया की ट्रस्ट द्वारा महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ एक निर्भया हेल्पलाइन नंबर है जिसे वर्ष 2014 से उपयोग में लिया जा रहा है, इस हेल्पलाइन के माध्यम से महिलाओं को कानूनी सहयोग वह मनोचिकित्सक सेवाएं प्रदान की जाती है।

ट्रस्ट की विमलेश सोलंकी ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने एवं बाल यौन हिंसा के रोकथाम पर ट्रस्ट के कार्यक्रमों से अवगत करवाया। लैंगिक अल्प संख्यक समुदाय के सशक्तिकरण एवं समय से मुख्यधारा से जोडने संबंधित कार्यों की जानकारी राहुल चौहान ने दी। मंत्री अहमद ने महिलाओं से कई सवाल भी पूछे। संभली ट्रस्ट के ट्रस्टी वीरेंद्र सिंह चौहान ने कोरोना में संस्था द्वारा किए गए कार्यों एवं प्रथम राशन बैंक का विवरण दिया।

नवनिर्मित भारतीय संसद में कोटपूतली के ग्राम भैंसलाना के ब्लैक मार्बल का इस्तेमाल

- **कोटपूतली के भैंसलाना का ब्लैक मार्बल विश्व प्रसिद्ध है**
- **यूरोप समेत खाड़ी देशों में ब्लैक गोल्ड के नाम से है सुप्रसिद्ध भैंसलाना का ब्लैक मार्बल**
- **संसद के निर्माण में 500 टन से अधिक ब्लैक मार्बल का हुआ है इस्तेमाल**
- **उदयपुर के मूर्तिकारों ने इस काले मार्बल पर बेहद उम्दा नक्काशी का कार्य कर भारतीय संसद को नये रूप में उकेरा है**

कोटपूतली, (निसं)। नवनिर्मित भारतीय संसद के निर्माण में कोटपूतली जिले के ग्राम भैंसलाना के ब्लैक मार्बल के इस्तेमाल ने ना केवल भैंसलाना बल्कि पूरे कोटपूतली जिले को राजस्थान के साथ-साथ देश भर में सुर्खियों में ला दिया है।

उल्लेखनीय है कि पीएम नरेन्द्र मोदी ने रविवार को राजधानी नई दिल्ली में देश की नई संसद का उद्घाटन किया। जिसमें राजस्थान के 6 जिलों से लाई गई वस्तुओं का इस्तेमाल किया गया है। इसमें अशोक स्तम्भ के निर्माण के साथ-साथ पत्थरों की नक्काशी का कार्य आबु रोड़ व उदयपुर के मूर्तिकारों ने किया है। वहीं लगभग दो वर्षों तक चले संसद भवन के निर्माण में अलग-अलग चरणों में 40 ट्रकों में भरकर यहां के ग्राम भैंसलाना से 500 टन से अधिक ब्लैक मार्बल नई दिल्ली भिजवाया गया। इस मार्बल को खानों से निकालने के बाद चिराई के लिए पहले अजमेर के किशनगढ़ फिर वहां से नई दिल्ली भेजा गया। जहां संसद भवन में अलग-अलग वस्तुओं के निर्माण के साथ-साथ मूर्तिकारों ने इस ब्लैक मार्बल में नक्काशी का कार्य किया है। जिससे भवन की खुबसूरती काफी बढ़ गई है। यह ब्लैक मार्बल नये संसद की शान बढ़ा रहा है जो क्षेत्रवासियों के लिए बेहद गर्व का विषय है।

मुगलकालीन है इतिहास : यहां से करीब 15 किमी दूर स्थित भैंसलाना ग्राम की उक्त खानों का इतिहास मुगलकालीन है। उदयपुर के मूर्तिकारों ने इस काले मार्बल पर बेहद उम्दा नक्काशी का कार्य कर भारतीय संसद को नये रूप में उकेरा है। कोटपूतली के ऐतिहासिक गांव चतुर्भुज जो कि यहां से महज 05 किमी की दूरी पर स्थित है। वहां स्थित चतुर्भुज भगवान मंदिर में बनी मूर्ति का निर्माण भी इसी काले मार्बल से हुआ है।

बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण वर्ष 1567 में हुआ था। क्योंकि चतुर्भुज गांव से ही साहबी नदी बहती है जिस पर मुगल बादशाह अकबर ने बांध बनाने का प्रयास किया था एवं विफल रहा था। इसी के बाद चतुर्भुज में मंदिर का निर्माण हुआ। इसी ब्लैक मार्बल से अन्य स्थानों पर जैसे मनोहरपुर में भी भगवान चतुर्भुज के मंदिर एवं वामन भगवान का मंदिर बनाया गया है। अन्य स्थानों पर भी इसी ब्लैक मार्बल से मंदिर व मूर्ति निर्माण का उल्लेख है जो इसकी विशिष्ठ पहचान है। विशेष चमक एवं काले चटक रंग के कारण यह ब्लैक मार्बल अलग ही छटा बिखेरता है। इसलिए इसे ब्लैक गोल्ड भी कहा जाता है।

कैल्शियम की अधिक मात्रा होने के कारण यह काफी नरम होता है जो नक्काशी के दौरान औजारों के उपयोग से टुटता नहीं है एवं मूर्तिकार इसे मनचाहा रूप दे सकते है। घिसाई के बाद भी इस पर चमक रहती है। मार्बल की यह भी विशेषता है कि निरन्तर सफाई करने से इसकी चमक बढ़ती है, जिसकी वजह से इससे पत्थर की मूर्तियां, टेबल, शिलालेख, स्तम्भ व शिवलिंग आदि भी बनाये जाते है।

ब्लैक गोल्ड के रूप में है पहचान :- भैंसलाना का यह ब्लैक मार्बल राजस्थान के मकराणा स्थित सफेद मार्बल की तरह दुनिया भर में ब्लैक गोल्ड के रूप में पहचान बना चुका है। जो कि विशेष तौर पर यूरोप सहित खाड़ी देशों में काफी लोकप्रिय है। ब्लैक मार्बल की चट्टानों को भैंसलाना की खानों से निकालने के बाद ब्लॉक के रूप में अजमेर के किशनगढ़ से चिराई कर गुजरात के कांडला पोर्ट द्वारा खाड़ी देशों में भेजा जाता है। इस व्यवसाय से बड़ी संख्या में भैंसलाना के युवा भी जुड़े हुए है। स्थानीय मार्बल व्यवसायी धर्म सिंह शेखावत का कहना है कि देश की सबसे बड़ी पंचायत में भैंसलाना के काले मार्बल का उपयोग स्थानीय ग्रामीणों के साथ-साथ पुरे कोटपूतली वासियों के लिए गर्व की बात है।

नई संसद में जब सांसद बैठेगें तो इस बात का गर्व हम सभी को होगा। भारतीय संसद देश की पहचान को दुनिया भर में मजबुत करती है। ऐसे में इसकी सुन्दरता को बढ़ाने वाले ब्लैक मार्बल की प्रसिद्धि बढ़ेगी तो इसका लाभ भैंसलाना के मार्बल व्यापारियों को भी मिलेगा।

इसके लिए ग्रामीण धर्म सिंह शेखावत समेत विक्रम सिंह, शम्भु सिंह, घम्मन यादव, सत्यवीर, हेमराज सिंह, सुमेर, गोविंद सिंह, आकाश पारीक व गजेन्द्र सिंह आदि ने पीएम मोदी का आभार जताया है।

राशिफल मंगलवार 30 मई, 2023

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, हस्त नक्षत्र बुधवार प्रात: 6:00 तक, सिद्धि योग रात्रि 8:54 तक, गर करण दिन 1:09 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मेष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग और कुमार योग सम्पूर्ण दिन-रात है। भद्रा रात्रि 1:28 से बुधवार दिन 1:47 तक रहेगी। शुक्र कर्क राशि में सांय 7:39 पर प्रवेश करेगा। आज गंगा दशमी, मटुक भैरव जयन्ती, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस यात्रा दर्शन पूजा है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:01 से 10:43 तक, लाभ-अमृत 10:48 से 2:06 तक, शुभ 3:48 से 5:29 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:11

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिवार में चल रही स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

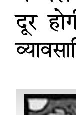

वृष
परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

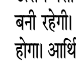

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

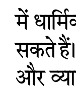

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

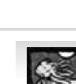

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

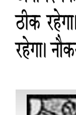

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

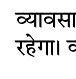

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मन में असंतोष रहेगा।

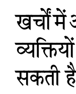

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

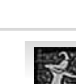

धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

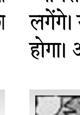

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

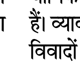

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

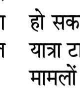

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।